



पेजबॉय हेयर स्टाइल 1950 के दशक में विकसित और लोकप्रिय हुआ था, ये ऐतिहासिक रूप से अंग्रेजी पेजबॉय द्वारा पहना जाता था, जिससे कि इस हेयर स्टाइल का नाम पड़ा। 1950 के दशक में कई प्रमुख फिल्म अभिनेत्रियों ने पेजबॉय हेयर स्टाइल रखा था और कई फैशनेबल महिलाओं ने भी अपनाया था।

आप लगें जरा हटके पेजबॉय स्टाइल

पेजबॉय हेयर स्टाइल एक तरह का हेयरकट है, जो सीधे, मध्यम और लंबे बालों के लिए तैयार किया गया है। पेजबॉय हेयर स्टाइल में बाल को कान के नीचे से काटा जाता है, जहां इसे अंदर की तरफ कर्ल किया जाता है, रिवर्स पेजबॉय हेयर स्टाइल में बाल को बाहर की तरफ कर्ल किया जाता है। हेयर स्टाइल को अक्सर बैंग्स के साथ भी किया जाता है, हालांकि यह जरूरी नहीं है।

एक अच्छी तरह से काटा गया पेजबॉय हेयर कट आसानी से संभाला जा सकता है। 1950 के दशक में यह एक नुकीला, स्टाइलिश लुक था, जो महिलाओं को आकर्षित करता था। किसी भी हेयर स्टाइल के साथ, पेजबॉय में कई सारे बदलाव संभव हो सकता है, कुछ इनमें से वास्तविक हेयर स्टाइल से अलग दिखते हैं। नरम लुक के लिए कुछ स्टाइलिस्ट पेजबॉय में बालों को हलके से कर्ल करते हैं, जिससे कि एक वेब हेयर स्टाइल बन सके, जिन लोगों के स्वाभाविक रूप से लहराते बाल होते हैं, वो भी पेजबॉय कट को अपनाते हैं। अन्य स्टाइलिस्ट अधिक संरचनात्मक पेजबॉय काटेदार परतों के साथ बनाये थे, बजाय क्लासिक सीधे, फ्लैट पेजबॉय के साथ जोड़ कर।

पेजबॉय हेयर स्टाइल का लुक चेहरे पर बहुत अच्छी तरह से सेट होता है, खासकर अगर चेहरे पर थोड़ा सा मेकअप कर लिया जाए, तो ये और भी उभर कर आता है। पेजबॉय आमतौर पर महिलाओं पर देखा जाता है, हालांकि कई अभिनेताओं को फिल्मों में पेजबॉय लुक की वजह से काम मिला है। पेजबॉय हेयर स्टाइल इस सलाह की वजह से उपयोग किया गया, जिससे कि बाल कोमल और चमकदार बने।

यदि आप पेजबॉय हेयर स्टाइल का विचार कर रहे हैं, तो आप एक छवि के लिए खोज पर विचार कर सकते हैं, जिससे कि आप को एक सटीक हेयर स्टाइल मिले। हालांकि पेजबॉय एक बहुत ही बुनियादी हेयर स्टाइल है, पर अगर आप उस पर बदलाव कर रहे हैं और आप की अपनाई जाने वाली शैली का स्पष्ट होना जरूरी है। कई हेयरड्रेसर के पास हेयर स्टाइल की किताबें होती हैं, जिसमें आप विशेष मॉडल की तरह अपने बालों को काटने का अनुरोध कर सकते हैं। बालों को कटवाते समय संचार महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा ही आप समझा सकते हैं कि आप को किस तरह का पेजबॉय हेयर स्टाइल चाहिए।

अपने सपने के घर को खरीदना हर किसी के लिए बड़ा रोमांचकारी अहसास होता है। लेकिन इस खुशी में कहीं आप अपने होमलोन को नजरअंदाज तो नहीं कर रही हैं। होमलोन लेते वक्त इन बातों का ध्यान रखेंगी तो कई परेशानियों से बच सकेंगी। हमेशा याद रखें कि होमलोन जंगल के एक शेर की तरह होता है, जो हर माह आपकी सैलरी का आधे से अधिक हिस्सा सालों तक खाता रहता है।

प्री पेमेंट पेनल्टी

यदि आप अपने लोन का समयपूर्व निपटान करना चाहती हैं तो इसके लिए प्री पेमेंट पेनल्टी वलॉज होता है, जिसमें कुछ पेनल्टी के साथ आप अपना लोन एक बार में पूरी रकम अदा कर चुका सकती हैं। कुछ बैंक यह पेनल्टी नहीं लेती हैं लेकिन कुछ बैंक परिस्थितियों के अनुसार इसे चार्ज करती हैं। उदाहरण के तौर पर यदि आप सरस्ती ऋण दर के कारण किसी दूसरे बैंक से लोन रिफाइनंस करवाती हैं और पहले बैंक का लोन प्री पेमेंट के जरिए चुकाना चाहती हैं तो इसके लिए वह बैंक जिससे आपने पहले लोन लिया है, आप पर भारी पेनल्टी लगा सकती है।

जब लेना हो होमलोन



इनका भी रखें ख्याल

लोन एग्रीमेंट करने से पहले उसमें दर्ज हर एक बिंदु पर बारीकी से नजर डालें और उसे अच्छी तरह समझने के बाद ही आखिर में उस पर हस्ताक्षर करें।

रेट ऑफ इंटररेस्ट

इंटररेस्ट लिए गए लोन पर ब्याज आपको हर महीने इंस्टॉलमेंट के साथ देना होता है। रेट ऑफ इंटररेस्ट सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं, एक फ्लैट और दूसरा फ्लोटिंग। इन दिनों फ्लोटिंग रेट का प्रचलन अधिक है। यहां एक अन्य दर भी प्रचलन में आई है, जिसे हम टीजर लोन कहते हैं, इसमें पहले कुछ सालों के लिए ब्याज दर सरस्ती होती है।

बेस रेट में बदलाव

बेस रेट में कई बार बदलाव होते हैं। यह प्रत्येक बैंक के इंटरनल पैरामीटर्स और आरबीआई द्वारा रेपो व रिवर्स रेपो रेट में बदलाव पर आधारित होता है। बैंक बेस रेट से नीचे कभी भी ऋण नहीं देता है। किसी बैंक के लिए बेस रेट एक बहुत ही महत्वपूर्ण हथियार होता है और इसमें मार्केट कं डीशन के हिसाब से बदलाव होते हैं। उपभोक्ता बेस रेट में बदलाव आने से इंटररेस्ट रेट में बदलाव आने के बाद प्रभावित होता है।

रिसेट वलॉज

फ्लैट इंटररेस्ट रेट मामले में सामान्यतः रेट फ्लैट ही होता है, लेकिन यहां एक रिसेट वलॉज है, जिसकी मदद से आप बैंक को एक निश्चित अवधि के दौरान अपने फ्लैट रेट को बेस रेट के अनुसार बदलाव करने के लिए कह सकती हैं।

सुरक्षा कवर

जब प्रॉपर्टी की कीमतें तेजी से नीचे गिरती हैं तो बैंक सिक्युरिटी कवर के वलॉज द्वारा आपसे एडिशनल

सिक्युरिटी की मांग कर सकते हैं। यदि आप नियमित रूप से अपनी ईएमआई का भुगतान करती हैं तो आप बैंक को इस डिमांड को नकार भी सकती हैं। लेकिन वर्तमान समय में यदि आप अपने लोन अमाउंट के अलावा सिक्युरिटी कवर देने में सक्षम नहीं हैं तो हो सकता है कि बैंक आपको डिफॉल्टर घोषित कर दे।

वलॉज को समझें

याद रखें कि कर्जदार हमेशा कम से कम महंगी दर पर लोन लेना चाहता है, जबकि बैंकों का लक्ष्य ऋण से लाभ कमाना होता है। हम आगे इन्हीं वलॉज के बारे में डिसकश करेंगे।

टीजर लोन फीचर्स

टीजर लोन में पहले आपको कम इंटररेस्ट देना होता है और बाद में यह मार्केट रेट के हिसाब से बढ़ता है। यदि आपने यह लोन लिया है तो यह सुनिश्चित कर लें कि आपने अपने लोन की पूरी समयवधि तक दिए जाने वाले इंटररेस्ट रेट को अच्छी तरह समझ लिया है। अधिकांश ऋणी अगले एक से तीन वर्ष की ईएमआई देखते हैं और इसके आधार पर फैसला ले लेते हैं, जबकि सही रास्ता यह है कि लोन शुरू होने के तीन से पांच साल बाद की ईएमआई पर हमें ध्यान देना चाहिए, जब टीजर रेट लागू होते हैं।

फ्लोटिंग रेट लोन

रिजर्व बैंक द्वारा बढ़ाए गए रेट के आधार पर बैंक फ्लोटिंग इंटररेस्ट रेट तो तुरंत बढ़ा देते हैं, लेकिन आरबीआई द्वारा रेट घटाने पर बैंक इंटररेस्ट रेट घटाने में रुचि नहीं दिखाते।

फ्लैट रेट लोन

लोन की पूरी अवधि के दौरान फ्लैट रेट में कोई बदलाव नहीं होता है। मार्केट कं डीशन के हिसाब से फ्लैट रेट को रिसेटिंग करने के लिए बैंक एक वलॉज भी यहां डालते हैं। इस बात का ध्यान रखें कि यदि आप फ्लोटिंग रेट का चुनाव करती हैं तो यह आपके लिए तब लाभकारी साबित हो सकता है, जब मार्केट कं डीशन सरस्ती इंटररेस्ट रेट के फेवर में हों।

जिम की ओर बढ़ता महिलाओं का रुझान

आज की तेजी से भागती-दौड़ती जिंदगी में हर कोई इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपने लिए ही समय नहीं है। और ऐसी महिलाएं, जो सर्विस भी करती हैं, उनके पास तो यकीनन समय का अभाव होता है। हालांकि कहा जा सकता है कि उनके मुकाबले घरेलू महिलाओं के पास काफी समय होता है, लेकिन यह बात घरेलू महिलाओं से बेहतर कोई नहीं जानता कि वे खुद कितनी व्यस्त हैं। शायद यह व्यस्तता का ही दबाव है कि महानगरों में आज एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है।

महानगरों से छोटे शहरों तक: यह बदलाव बताता है कि महिलाएं आज खुद को फिट रखने के लिए जिम जाने लगी हैं। इनमें बड़ी संख्या में घरेलू महिलाएं भी शामिल हैं। मजेदार बात यह है कि यह ट्रेंड महानगरों का ही नहीं है, बल्कि छोटे शहरों और कस्बों तक में महिलाओं के जिम खुल रहे हैं और इनमें घरेलू महिलाओं की तादाद लगातार बढ़ रही है।

मध्यवर्ग में बढ़ता चलन: यह बात एक लंबे समय से कही जाती रही है कि परिवार चलाने के लिए महिलाओं का फिट रहना बहुत जरूरी है, लेकिन वे कैसे फिट रहें, इसके बारे में कुछ साल पहले तक कोई व्यवस्थित गाइडलाइन नहीं थी। पर वैश्वीकरण और बदलते समाज ने जिम के रूप में परिवार की धुरी रही महिलाओं को फिट रखने का मानो नया मंत्र दे दिया है। जिम की ओर रुख करने वाली महिलाओं में अधिसंख्य महिलाएं मध्यवर्ग की होती हैं। वे खुद जिम का खर्चा वहन कर सकती हैं।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता: शालिनी अरोड़ा अपने पति के साथ पिछले पंद्रह साल से जिम जा रही हैं। यह पूछने पर कि वे जिम क्यों जाती हैं, वह हंसते हुए कहती हैं, 'अगर मैं जिम नहीं जा रही होती तो अब तक न जाने कितनी बीमारियों का शिकार हो जाती। जैसे कि ढेर सारी महिलाएं 50 की उम्र के बाद होने लगती हैं। जिम में जाकर, एक घंटा बिता कर अगर मैं फिट रह सकती हूँ तो इसमें बुराई क्या है।' मन को शांति की तलाश: इसी तरह एक और घरेलू महिला संगीता जैन ने बताया कि 'जिम से मन को शांति मिलती है कि हम कम से कम कुछ मेहनत तो कर रहे हैं। हालांकि मुझे ये बात अजीब लगती है कि लोग मेहनत



करके पैसा कमाते हैं और मैं यहां पैसा देकर मेहनत करती हूँ। पिछले दो साल से मैं रेगुलर जिम आ रही हूँ। इसीलिए शायद मैं अपने आप को हमेशा फिट महसूस करती हूँ।' आत्मविश्वास पर सकारात्मक असर: दिलचस्प बात है कि जिम जाने वाली महिलाएं न केवल शारीरिक रूप से फिट दिखाई देती हैं, बल्कि वे मानसिक रूप से भी कहीं ज्यादा फिट नजर आती हैं और यह बात उनके आत्मविश्वास में भी इजाफा करती है। जिम में पिछले कुछ वर्षों में लड़कियों की तुलना में घरेलू महिलाओं का रुझान बढ़ा है, ट्रेनर विजय बताते हैं, 'यह सच है कि पिछले कुछ सालों में लड़कियों की तुलना में घरेलू महिलाओं का रुझान जिम की ओर अधिक हुआ है।

योग क्रियाओं का अभ्यास: गुडगांव के एक बड़े जिम में पर्सनल ट्रेनिंग देने वाले पवन ने बताया कि बाबा रामदेव द्वारा बताई गई कई एक्सरसाइज महिलाएं हमारे जिम में आकर करती हैं। हम भी उनको इसलिए मना नहीं करते, क्योंकि उसका रिजल्ट कहीं न कहीं उन पर अच्छा दिखता है। हमारे पास कई ऐसी घरेलू महिलाएं पर्सनल ट्रेनिंग के लिए आई हैं, जिनकी उम्र 35 से 55 के बीच है। जाहिर है यह बात सुखद भी है और बदलाव का संकेत भी।

फ्रेंड सर्कल भी बढ़ा: नियमित जिम करने वाली एक और घरेलू महिला सलोनी काफ़ी पढ़ी-लिखी हैं, पर शादी के एक साल बाद उनके पति ने उनकी नौकरी छुड़वा दी थी।

जिम पर अब केवल पुरुषों और नौकरीपेशा महिलाओं का ही वर्चस्व नहीं रहा। पिछले कुछ सालों में महानगरों, शहरों और छोटे कस्बों की घरेलू महिलाओं ने भी जिम की ओर रुख किया है। जिम जाकर ये महिलाएं न केवल खुद को फिट रखना सीख रही हैं, बल्कि वहां का माहौल इन्हें मानसिक रूप से भी एक सुकून दे रहा है।



